What is Arya Samaj?

Arya Samaj is an institution founded by Maharishi Dayanand Saraswati based on the universal teachings of the Vedas. It is an organisation propagating universal message of the Vedas for the benefit of the entire humanity.

ARYAN VOICE

YEAR 37	18/2015-16	MONTHLY	December 2015

Celebration of Indian Republic Day
At Arya Samaj Bhavan
On Sunday 31st January 2015
From 11am to 1.30pm

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)
ERSKINE STREET, NECHELLS, BIRMINGHAM B7 4SA
TEL: 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj		**3**
Develop the Potential of Mind	**by Krishan Chopra**	**4**
१४ वाँ सँस्कार- वानप्रस्थ	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**6**
१५ वाँ सँस्कार-सँन्यास धर्म	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**9**
Charity Dinner Held On 17th November 2015		**13**
Matrimonial Advert		**15**
News		**16**
Important		**19**

For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday: - 1pm-5pm
Tuesday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,
Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.
Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org

10 Principles of Arya Samaj

1. **God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rigved, Yajurved, Samved and Atharva Ved contain all true knowledge,spiritual and scientific, known to the world.)**

2. **God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**

3. **Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**

4. **All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**

5. **All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**

6. **The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**

7. **All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**

8. **We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**

9. **One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**

10. **In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

Develop the Potential of Mind

Manase cetase dhiyam akutaya uta cittaye l matyai srutaaya caksase vidhema havisa vyam ll

Atharva Veda 6.41.1

Meaning in Text Order

Manse = for mental power
Cetase = for intellectual power
Dhiya = for contemplation
Akutaya = for determination
Uta = and
Cittaya = for power of memorization
Matayai = for intellect
Srutaya = for knowledge through listening
Chaksase = for perception through eyes
Vidhema = may we make effort
Havisa= offer oblation
Vayam= we.

Meaning

Let us make an effort to create, through offering oblation in an atmosphere conducive for mental and intellectual, comprehension, determination, understanding, resolution, learning and realisation through ears, eyes and intellect..

Contemplation

Human beings are gifted with the instrument of the mind. It has much vital potential therefore, human beings are considered, supreme of all creatures in the universe. The mind and the moon are related, the mind has the softness of the moon. It is like an ocean. A devotee prays to God that they offer the oblation of mind and pray to you for the development of our potential.

First of all we pray to you to grant us the development of the power of contemplation so that whatever we hear or read, we will be able to go into the depth of matter. You accumulate knowledge in your mind because without knowledge, man is like a beast. Then we pray you to grant us the power of meditation and to retain power so that we can meditate on a subject and we can keep that subject in our mind for a long time. This power helps to keep that subject in the mind for ever O Lord! Grant us the power of determination because a person cannot initiate any resolve, and without determination cannot stick to the resolution. Grant us strength so that we can remember the past. Grant us the power of discretion so that we can make the decision quickly. Grant us the power of memory. Many sages used to memorise the scriptures by listening. Knowledge through eyes has its own importance. Through the eyes, we observe minutely nature, human art and science that is crystal clear and stays in the mind for a long time.

by Krishan Chopra

१४ वाँ सँस्कार- वानप्रस्थ

आचार्य डॉ. उमेश यादव

वानप्रस्थ सँस्कार अर्थात् वन में रहने हेतु प्रस्थान करने के लिये जो औचित्य किया जाता है; वही वानप्रस्थ सँस्कार है । वन में जाकर रहना एक जीवन की तपस्चर्या है । पुत्र की संतान जब हो जाये अर्थात् दादा-दादी, नाना-नानी बन जायें तब लगभग वानप्रस्थ का समय आ जाता है । श्रद्धापूर्वक वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा लेते हुये तपपूर्वक वन में जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा लेना ही वानप्रस्थ सँस्कार का मूल है । यह विधि यज्ञपूर्वक सम्पन्न होती है जिसमें तपस्वी योग्य विद्वान् पुरोहित द्वारा विधि सम्पन्न होना आवश्यक है । गृहस्थाश्रम की समाप्ति और वानप्रस्थाश्रम का प्रारम्भ - यह एक योग है । इसे शाश्त्रों में योगाग्नि भी कहते हैं जो "त्रिनाचिकेताग्नि" के अन्तर्गत् मान्य है । इसको विस्तार से समझने के लिये कठोपनिषद् द्रष्टव्य है । २५ वर्ष ब्रह्मचर्य, २५ वर्ष गृहस्थ और इसी प्रकार २५ वर्ष वानप्रस्थ और फिर आगे का जीवन संन्यास का मान्य है । जीवन के ५० वर्ष के बाद वानप्रस्थाश्रम शुरु होता है । तब सिर में श्वेत बाल निकलकर भी व्यक्ति को तपस्वी जीवन की ओर जाने की प्रेरणा देने लग जाते हैं । पुत्रादि को गृहस्थ की शिक्षा देकर सबको एक साथ व्यावहारिकरुप से मिलकर रहने का उपदेश देते हुये स्वयं जग-कल्याण व तपश्चर्या का जीवन जीने हेतु वानप्रस्थ लें । अपनी स्त्री को पुत्र-पुत्रवधू के साथ छोड़ अथवा उसकी ईच्छा से उसे भी साथ ले वानप्रस्थ की दीक्षा विधिवत् दिलाकर वन में या कहीं अन्यत्र दोनों साथ रह सकते हैं पर शयन-भोजन आदि व्यवहार पृथक्-पृथक् करें । अगर स्त्री घर में ही अपने वच्चों के साथ रहे तो तपस्चर्यापूर्वक रहे, वच्चों को यज्ञ,

योग, सँस्कृति और वेदधर्म की सदैव प्रेरणा देती रहे और प्रसन्नतापूर्वक रहे । पुरुष स्वयं जंगल में जा वेदादि सद् ग्रन्थों का स्वाध्याय करें, दूसरों को भी पढ़ावें और जीतेन्द्रिय हो सबके साथ मित्र-भाव बनाकर रहें । लोभ से दूर रहें, जंगल में रहने वाले अन्य वानप्रस्थ वा गृहस्थ से भिक्षा ग्रहण करें । धीरे-धीरे कन्द-मूल खाकर जीवन निर्वहन करने का अभ्यास बढ़ाते रहें । आत्मिक ज्ञान की वृद्धि, परमात्मा की उपासना व वेद, उपनिषदादि सद् ग्रन्थों का स्वाध्याय करके स्वयं को श्रेष्ठ बनावें और अन्यों को भी यथासम्भव तदनुकूल ज्ञान बाँटें । यह हर वानप्रस्थी का मुख्य उद्देश्य होगा । आधुनिक वातावरण में वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर लोग शहर में भी रहते हैं पर वच्चों से पृथक् अपनी व्यवस्था से अथवा वानप्रस्थाश्रम अथवा किसी भी आश्रम में जहाँ यज्ञ, योग, उपासना का वातावरण हो ।

यह बताना उचित ही होगा कि वानप्रस्थी स्वेच्छा से जब भी चाहें, सँन्यास ले सकते हैं अथवा वानप्रस्थाश्रम में ही बने रहें । सामान्यतया सँन्यासाश्रम का समय ७५ वर्ष की उम्र के पश्चात् आरम्भ होता है तथापि व्यक्ति ब्रह्मचर्य-काल समाप्त होने के बाद कभी भी स्वेच्छा से सँन्यास की दीक्षा ले सकता है पर उद्देश्य वेदादि का स्वाध्याय, त्यागमय जीवन, उपासना व परोपकार का महत्त्व युक्त ही हो । सँन्यास लेने से पहले पूर्व की व्यवस्था को सुनिश्चित करना उसका धर्म होगा ।

वानप्रस्थाश्रम का विशेष उद्देश्य- तप, त्याग, स्वाध्याय व ईश्वरोपासना करके पूर्ण रुप से आध्यात्मिक व परोपकरमय जीवन जीना ही वानप्रस्थ की प्रधानता है । भोगवादि दुनियाँ से अलग होकर योग व परोपकारमय जीवन व्यतीत करना इस आश्रम की महत्ता है । जीवन के चार

महत्त्वपूर्ण उद्देश्य हैं जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नाम से जाने जाते हैं । वानप्रस्थ व सँन्यास में धर्म और मोक्ष का महत्त्व मुख्य हो जाता है; साथ ही अर्थ व काम का महत्त्व छूट जाता है जबकि अर्थ व काम गृहस्थाश्रम तक अधिक महत्त्वपूर्ण बना रहता है । अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को भी धीरे-धीरे कम करना वानप्रस्थ जीवन का कर्त्तव्य बनता है । उनके इस अभ्यास से संसार की गरीबी मिटाने में राजा या सरकार को स्वाभाविक मदद मिलती है । इस कारण ही यहाँ तप व त्याग की शिक्षा है । अनुभवी वानप्रस्थी अगर अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार गरीबों को नि:शुल्क पढ़ावें, उन्हें श्रेष्टता व सरलता की प्रेरणा दें तथा आवश्यक लोगों को यथासम्भव सहायता करने की शिक्षा दें तो निश्चित ही वे वानप्रस्थी राष्ट्र की गरीबी दूर करने में तथा मानवमूल्यों को बढ़ाकर प्रजा को श्रेष्ठ नागरीक बनाने में सहायकसिद्ध हो सकेंगे ।

उपसंहार- वानप्रस्थ सँस्कार एक विशेष उद्देश्य के साथ है । इसकी सम्पन्नता विधिवत् होती है । इससे वानप्रस्थी जीवन भर तप, त्याग, परोपकार, जप, उपासना, स्वाध्याय, आत्मिक उन्नति और सदैव ईश्वर-प्रणिधान करते हैं । धर्म व मोक्ष की प्रधानता में चलकर सँसार के लोगों को धर्म=अर्थ-काम-मोक्ष की उचित शिक्षा देकर सबको श्रेष्ठ बनाने में सतत लगे रहते हैं ।

समारोह पर उपदेश - इस सँस्कार समारोह पर किसी धर्मात्मा विद्वान् आचार्य वा योग्य महात्मा का सदुपदेश हो जिसमें वानप्रस्थ-मूलक उद्देश्यों का स्पष्टिकरण हो और जन-समुदाय को श्रेष्ठ आचरण धारण करने में अटूट प्रेरणा मिले ।

१५ वाँ सँस्कार-सँन्यास धर्म

आचार्य डॉ. उमेश यादव

सँन्यासाश्रम जीवन का अंतिम आश्रम है । ७५ वर्ष पूर्ण हुये पश्चात् सँन्यास का सामन्यकाल है पर इसके लिये कोई समय की दृढ़ता नहीं है । ज्ञान-विज्ञान को ब्रह्मचर्यपूर्वक बढ़ाते हुये जब भी सच्चा वैराग्य हो जाये तब ही सीधा सँन्यास-ग्रहण सम्भव है । चाहे ब्रह्मचारी हो, गृहस्थ हो या वानप्रस्थ हो, किसी समय भी दृढ़ वैराग्य होने पर सँन्यास की दीक्षा ली जा सकती है । मोह-त्याग, पक्ष-पात-रहितता, विषयासक्ति से पूर्ण विरक्ति, मरण पर्यन्त परोपकार की प्रबल ईच्छा रखना, सतत् ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि तथा वेदादि सत् शास्त्रों के ज्ञान व सद् विज्ञान के प्रचार में लगे रहना इत्यादि ही सँन्यास का मुख्य धर्म है । वन में रहकर परोपकार मय जीवन जीना वानप्रस्थ है पर सँन्यासी पूर्ण भूमन्डल पर घूम-घूम कर तप, त्याग व परोपकारमय जीवन व्यतीत करता है । सँसार का हित दोनों का उद्देश्य है पर एक एक जगह रहने के लिये अपनी कुटिया बनाता है और वहीं से चारों ओर भ्रमण करता है पर दूसरा विना किसी कुटिया बनाये ही सर्वत्र भ्रमण करके जग-हित में लगता हुआ भिक्षाटन पर जीवन बिताता है । सँन्यासी का जीवन और ही दुभर है । इस कारण सँन्यासी को यथार्थ ज्ञान का होना अनिवार्य है ताकि वह सबको सदा सन्मार्ग दिखाये और सबके लिये श्रद्धा का पात्र बना रहे वरणा यह कहना उचित होगा कि केवल भगवे कपड़े डालकर विना ज्ञान का तो वह पृथिवि का भार ही होगा ।

तप, त्याग, परोपकार, स्वाध्याय और ईश्वरोपासना तो सबके लिये अनिवार्य है चाहे वह वानप्रस्थी हो या सँन्यासी । ब्रह्मचारी हो या गृहस्थ, सब को

ज्ञान-विज्ञान का स्वामी होना उचित है । महर्षि दयानन्द सँस्कार विधि में सँन्यास की परिभाषा इस प्रकार करते हैं- "सम्यङ्. न्यस्यन्त्यधर्माचरणानि येन वा सम्यङ्. नित्यं सत्यकर्मस्वास्त उपविशति स्थिरि भवति येन स सँन्यास: । सँन्यासो विद्यते यस्य सँन्यासी" , इसका अर्थ- "जिससे अधर्माचरण को सम्यग् रुप से छोड़ देते हैं अथवा जिससे सम्यग् रुप से नित्य ही सत्कर्म में जो विराजमान होते हैं या स्थिर होते हैं, वह कर्म सँन्यास कहलाता है । सँन्यास का यह गुण जिसमें विद्यमान हो, वह सँन्यासी कहा जाता है" । देखें- सँन्यास सँस्कार-सँस्कार विधि, महर्षि दयानन्द सरस्वती

सँन्यासी का कर्त्तव्य और स्वभाव- आराम तो किसी आश्रम में नहीं है । आश्रम शब्द की श्रम मूलक है । अत: सभी आश्रमों की भाँति सँन्यास भी श्रम वा तप से जुड़ा हुआ है । अन्तर इतना है कि अन्य आश्रम में रहने वाले लोग थोड़ा जिम्मेवारी मूलक स्वार्थ से घिरे होते हैं पर सँन्यासी स्वार्थ छोड़ पूर्ण परोपकार का जीवन जीते हैं । मोक्ष की साधना प्रधान बन जाती है । मृत्यु से सदैव सँन्यासी निर्भिक रहता है उल्टा हर पल मृत्यु के स्वागत् में सँन्यासी सदा ही तैयार रहता है । वह विरक्त भावी होकर ही सँसार का हित करता है । यही भाव उसके लिये मोक्ष का कारण बनता है । कितनी मस्ती है उसके जीवन में । आसक्ति नहीं, मोह नहीं, पूर्णतया इन्हें सँन्यास भाव देकर अर्थात् कन्धों से बाहर फेंक कर सर्वथा निश्चिन्त्य रह जगोपकारक ज्ञान-विज्ञान का उपदेश देता हुआ अनवरत वह ब्रह्म-आनन्द की ओर बढ़ता रहता है । यही उसकी फितरत है । प्राणी मात्र को पीड़ा न देना, निन्दा व अपमान से न डरना, सदा धर्म का ही आचरण करना, पक्षपात रहित होकर सबके साथ सम्भाव वुद्धि से व्यवहार करना,

सँन्यासी के लिये निर्धारित वस्त्र, दण्ड-धारण इत्यादि नियमों का पालन करना, सिर के बाल, दाढ़ी-मूछ-नख आदि कटवाकर रखना, एक सँन्यासी का सहज कर्त्तव्य है । कई सँन्यासी सिर के बाल, दाढ़ी-मूछ भी रखते हैं क्योंकि ये बाह्य धर्म माने जाते हैं ; ये चिन्हात्मक हैं न कि आन्तरिक गुणात्मक । कुसुम रंग (गेउरिया रंग) का वस्त्र-धारण मानो उनका जीवन सदा यज्ञमय बने रहने का प्रतीक है । हाँ, यज्ञीय अग्नि का रंग भी तो यही है । दण्ड-धारण से मार्ग में चलते-फिरते बाह्य हिंसक पशु, चोर आदि उचकों से स्वयं को सुरक्षा देने में सहायता मिल सकती है ।

सँन्यासी सदैव धर्म से जुड़ा रहे । केवल वाणी से ही नहीं अपितु जैसा बोले वैसा करे भी । जन मात्र को तप. त्याग, स्वाध्याय, परोपकार आदि का सदुपदेश देते रहना और तदनुकूल स्वयं भी आचरण करना सँन्यासी का मुख्य धर्म है । इससे ही सँसार का कल्याण सम्भव है ।

जैसा कि हम पूर्व भी विचार कर चुके हैं कि सँन्यासी विद्या, शुद्धाचरण, तप व त्याग से युक्त होकर सदा अपनी वाणी व कर्म से संसार का भला करने में लगा रहे , इसके लिये उसे विद्वान्, धर्मात्मा व ईश्वरभक्त होना अनिवार्य होगा वरणा वह धरती पर भार होगा । आजकल यह देखा जाता है कि कुछ लोग घर की जिम्मेवारियों से तंग होकर घर से बाहर भाग जाते हैं और गेउरिया वस्त्र धारण कर दण्ड-कमण्डल ले दाढ़ी-मूछ बढ़ाकर घूमते-फिरते हैं और यहाँ तक कि वे गाँजा-भांग के शिकार हो टोली बना लेते हैं । अज्ञानता के अभाव में भोले-भाले लोगों को भी बहकाते रहते हैं, सच में ऐसे लोग सँन्यासी नहीं हो सकते । इनमें कुछ तो वैरागी बन जाते हैं पर वे अवैदिक मान्यताओं के शिकार हो स्वयं भी भटकते हैं और दूसरों

को भी भटकाते हैं, यह अशोभनीय है । सत्य ज्ञान से ही उनका या उनसे जग का कल्याण सम्भव है । महर्षि दयानन्द की भाषा में अज्ञानी, भंगेड़े आदि उल्टे आचरण के लोग केवल भगवे वस्त्र से सँन्यासी की संज्ञा नहीं पा सकते । सँन्यास के लिये केवल इन वस्त्र, दण्डादि धारण करना ही धर्म नहीं है । वैदिक धर्म इन्हें कभी स्वीकार नहीं कर सकता -मनुस्मृति ६/५२ -देखें अर्थ-महर्षि दयानन्दकृत- संस्कार-विधि

सँन्यासी स्वभाव से वीर हो पर सम्मान को विष समझे । अपमान से न डरे वल्कि धर्म में सदा जुड़ा रहे । हानि-लाभ, मान-अपमान, मृत्यु, आसक्ति, प्रीति (लगाव), वैर आदि इन सब से सर्वथा अलग होकर सुख-दु:ख के साधनों की चिन्ता किये विना निरन्तर धर्म का ही काम करे । इन सब प्रवृत्तियों वाला व्यक्ति ही सँन्यास की दीक्षा ले वरणा न ले ।

CHARITY DINNER HELD ON 7TH NOVEMBER 2015

On 7th November 2015 evening Charity Dinner was held in Arya Samaj West Midlands Bhavan.

About 240 people attended the function. On arrival guests were welcomed by Dr. Narendra Kumar and Mr. Krishan Chopra. Diwali sweets were offered to the guests.

Trustees Dr. Arvind Sharma, Mr. Harish Malhotra, Dr. Umesh Kathuria, Mr. Shailesh Joshi and Mr. Alok Yadav helped with checking the tickets.

Main hall of Arya Samaj was well decorated with lights mainly by Mr. Dhansukh Rana, our dedicated cleaner of the Bhavan. Tables were laid out and decorated by our team members consisting of Acharya Umesh Yadav, Dr. Arvind Sharma, Mr. Harish Malhotra, Mr. Raj, Mr. Dhansukh Rana, Miss. Raj Chauhan part time Manager and Dr. Narendra Kumar.

Acharya Umesh Yadav, Mr. Dhansukh Rana, Mrs. Shama Kumar, Miss Roshni Joshi lighted Diya and decorated the entrance hall and main hall with Diya.

Starters were served about 6.30pm.

About 7.15pm Mr. Shailesh Joshi, compere for the evening, welcomed the guests and informed the audience about general rules of the house and programme for the evening.

Dr. Narendra Kumar, Chairman of the Board of Trustees, wished the audience a very happy Diwali and a prosperous New Year. He also informed the audience about take over of our premises by HS2 in 2017 and money raised tonight will help us in funding for new premises in future. He told the audience in brief about DAV Primary Free School project for the future.

He thanked Mr. Ashwani, owner of Shanker Sweet Centre, in person on the stage for providing free food for this event. He also thanked Britannic warehouse for donating £251 for raffle prizes, Mr. Rajesh, Paul Jewellers for donating a 22 Karat gold chain worth £225.

Dr. Kumar thanked Acharya Umesh ji, Dhansukh Rana, Miss Rajashree Chauhan, all friends who helped in selling Charity Dinner tickets and trustees of Arya Samaj for their help in making this night a success.

In the end he introduced the "Man From Africa" singers Mr. Hitesh and Mrs. Rama Jobanputra and their live band to the audience. Audience thoroughly enjoyed the melodious songs sung by Hitesh & Rama ji.

A team of Mrs. Shama Kumar, Miss Prama Yadav, Miss Megha Jagga, Miss Roshni Joshi and Mr. Suketu Yadav sold the raffle prizes tickets to the audience to the value of £555.

Dinner was served about 9.30pm.

Raffle prize draw was organised by Mr. Shailesh Joshi. A gold chain, a wrist Watch, a Bush Radio and cabin suit case prizes were distributed by Mr. Krishan Laroiya Ji.

A second round of live songs and music were performed from 10.30 pm till mid night. Quite a good number of audience enjoyed it till the end.

The audience thoroughly enjoyed the whole programme.

Altogether tickets worth £4740 were sold. Donations of £311 were received. So total money raised was about £5606. After deducting expenses we saved about £3700.

The members of the Board of Trustees would like to express their gratitude to every one for their financial support as well helping in making this night a success.

VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

Join today.....

Application form and information can be found on the website

www.arya-samaj.org

Or

Call us on

0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Bank Holidays - Closed

News

Congratulations:

- **Mrs. Manju Menon and family (Leicester) for the marriage of her son Rajesh's to Vicky (Birmingham)**

Arya Samaj West Midlands would like to thank all Yajmans and sponsors for Sunday vedic Sermon and Rishi Langar.

- **Dr Purushottam and Mrs Rekha Gutpa for performing Havan in memory of their parents on Sunady 1st November 2015**
- **Miss Charu Malhotra became Yajman on Sunday 8th November 2015**

Donations to Arya Samaj West Midlands

- **Dr. P.D. Gupta for Rishi Langar and donation £246**
- **Dr. Narendra Patel £21**
- **Mr. Manohar Lal £10**
- **Mrs. Ann Laroiya £50**

- **Mr. Munish Malhotra** **£51**

Donations to Arya Samaj through Priest Services.

- **Mrs. Manju Menon** **£400**
- **Dr. H.M. Verma** **£50**
- **Dr. Arun Bedi** **£31**
- **Mr Karmjit Gaddu** **£52**
- **Mr Anil Verma** **£51**
- **Miss Pallavi Pandya** **£51**
- **Mrs Nirmal Prinja** **£10**
- **Mrs Baishakhisen Gupt** **£11**

Thank you for all your Donations

Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on 0121 359 7727 for more information on

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**

- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**

- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**

- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**

- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 6th December 2015 & 3rd January 2016**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org

IMPORTANT

Notices to Arya Samaj West Midlands Members

- **Dear Ordinary members of ASWM we are sending out reminder letter for renewal of your membership fee of £20. This money helps us to send you Aryan Voice each month. Please kindly pay the fee once you have received the reminder letter. The letter will come out to members on the month they joined or from January 2016 we will have to sadly cancel the membership of those who have not paid the fee.**

- **Dear members, we are updating our email database for the membership of Arya Samaj West Midlands. We do not have email addresses of a large number of our members. In this time and age it is important to have this information. So if you have an email address please inform our office by emailing your address to enquiries@arya-samaj.org. Your cooperation will be highly appreciated.**